मैक्स मिलियन एमिल वेबर : मीमांसात्मक अनुपूरकता और प्रासंगिकता

–मनोज छापड़िया
एसो.प्रोफे. : समाजशास्त्र विभाग
का.सु. साकेत पी.जी. कॉलेज, अयोध्या

मैक्स मिलियन एमिल वेबर प्रमुख शास्त्रीय समाजशास्त्रियों में से एक थे जो, आधुनिक सामाजिक विचारों के इतिहास में संस्थापक पिता के रूप में ही नहीं, अपितू समाजशास्त्र को पद्धतिशास्त्रीय दृष्टि से समृद्व करने के साथ ही साथ, उत्तर आधुनिकता का बीजारोपण करने की दृष्टि से भी श्रद्धास्पद है। वास्तव में वेबर के दृष्टिकोण और विमर्श को मार्क्स के वैज्ञानिक सिद्धांतों के खंडन के रूप में नहीं बल्कि इस विधि के अनुपूरक के रूप में देखा जाना चाहिए। प्रस्तुत शोध पत्र में मैक्स वेबर के संदर्भ में समाजशास्त्र और इतिहास के विमर्श और विश्लेषण में इस तथ्य पर बल दिया जाएगा कि इतिहास की अपनी–अपनी अवधारणा में वेबर और मार्क्स अविरुद्ध और अनुपूरक हैं। इन दो विचारकों के बीच स्पष्ट राजनीतिक और विचारधारात्मक अंतरों के बावजूद यह बात सही है।

शब्द संकेत– मैक्स मिलियन एमिल वेबर, ऐतिहासिक, पद्धतिशास्त्रीय, अनुपूरकता, निर्वचनात्मक अवबोध

प्रस्तावना

शास्त्रीय विचारकों ने सामाजिक यथार्थ को समझने, व्यवस्था करने के लिए दृढ़ संज्ञानात्मक प्रयास किए हैं, जो कि व्यवहारिक दृष्टि से अद्वितीय है और प्रतिरूप के साथ–साथ इसके अनिश्चित चरित्र का एक उत्सुक संयोजन प्रस्तुत करते है। अतः शास्त्रीय विचारकों का महत्वपूर्ण योगदान यह है कि उन्होंने संचयी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को प्रभावित किया है। विकास की प्रक्रिया में, समाजशास्त्र ने प्रत्यक्षवादी ज्ञान मीमांशा पर अधिक बल दिया था। समाजशास्त्र के संस्थापक पिता, सामाजिक यथार्थ को समझने के लिए वस्तुनिष्ठ प्रारूप को आधारभूत मानकर, उस पर स्वयं को केन्द्रित किया, जिसकी एक मजबूत प्रवृत्ति सामाजिक दर्शन में भी दृष्टिगत होती है। जॉन स्टुअर्ट मिल प्रत्यक्षवादी अनुभव जन्य पद्धति के विरोधी थे। इस प्रवृत्ति ने कार्य–कारण की व्यवस्था की और वस्तुनिष्ठता तथा परिमाणीकरण पर बल दिया। इस प्रभू प्रवृत्ति के साथ–साथ एक सामानान्तर दृष्टिकोण भी मौजूद था। विल्हेल्म देल्ते द्वारा अग्रेषित, जो प्राकृतिक विज्ञान के विरोध में एक मानसिक विज्ञान को संरचित कर रहे थे, घटना की गुणात्मक समझ के प्रबल अभिविन्यास के साथ *वर्स्टेहेन* (Verstehen) पर आधारित था। इन्होंने यथार्थ को द्वैतवादी रूप में देखा, जहां प्राकृतिक घटनाओं को प्राकृतिक विज्ञानों द्वारा स्पष्टीकरण के भौतिकवादी प्रणाली से, जबकि मानवीय/सामाजिक यथार्थ को गुणात्मक समझ के विभिन्न तरीकों यथा–*निर्वचनात्मक अवबोध* (Verstehen) द्वारा समझा जा सकता है।

प्रमुख नव–कांतवादी विचारक यथा हेनरी रिकर्ट ने प्राकृतिक वास्तविकता और मानवीय वास्तविकता के मध्य अंतर को त्रुटिपूर्ण माना। उसके लिए वास्तविकता एक थी, अंतर केवल वैज्ञानिकों के संज्ञानात्मक लक्ष्यों में था और इस कारण वे सांस्कृतिक विज्ञान के अपने विचारों के साथ आए थे। रिकर्ट ने सामाजिक यथार्थ की ऐतिहासिक समझ पर अधिक जोर दिया।

मैक्स वेबर सबसे प्रमुख शास्त्रीय समाजशास्त्रियों में से एक थे जो, आधुनिक सामाजिक विचारों के इतिहास में संस्थापक पिता के रूप में ही नहीं, अपितू समाजशास्त्र को पद्धतिशास्त्रीय दृष्टि से समृद्व करने के साथ ही साथ, उत्तर आधुनिकता का बीजारोपण करने की दृष्टि से भी श्रद्धास्पद है। वेबर 19वीं शताब्दी की जर्मन बौद्धिक परम्परा में शास्त्रीय बहस में, मेथोडेन्स्ट्रीट की दुविधायों के साथ इसी लीक पर विचार–विमर्श में रत थे। उन्होंने रिकर्ट के विचारों को स्पष्ट और तार्किक पाया और उसका प्रयोग स्वयं के पद्धतिशास्त्रीय प्रारूप को निर्मित करने हेतु किया। वह समझ और कारण के मध्य के अंतराल को पाटने में सफल रहे। उन्होंने वैज्ञानिक व्याख्या के साथ ऐतिहासिक विश्लेषण को भी संगत पाया। कार्ल मार्क्स के अतिरिक्त, यह वेबर ही है (यहां तक की एमिल दुर्खीम से भी अधिक) जिन्होंने ऐतिहासिक तथ्य, सहानुभूति और अंतरदृष्टि को सामाजिक यथार्थ के अन्वेषण में और स्पष्टीकरण हेतु प्रयुक्त किया (अग्रवाल 2004)।

इसी आलोक में प्रस्तुत शोध पत्र का प्रथम भाग वेबर और मार्क्स की अनुपूरकता के विश्लेषण पर केंद्रित है तथा दूसरा भाग वेबर की भारतीय यथार्थ को समझने में प्रांसगिकता और अंत में सामाजिक विज्ञान और मूल्य का विश्लेषण किया गया है ।

वेबर और मार्क्स की अनुपूरकता और अविरोध का विश्लेषण

टालकॉट पार्सन्स ने 1929 में घोषणा की कि *दि प्रोटेस्टेंट एथिक एंड दि स्पिरिट आफ कैपिटलिज्म* के पीछे वेबर का उद्‌देश्य'...... एक विशेष ऐतिहासिक विषय में मार्क्स की अभिधारणा का खंडन करना था। 1940 के दशक के आखिर में वेबर की *इकानामी एंड सोसाइटी* के अंशों का अनुवाद करते समय पार्सन्स ने फिर घोषणा की कि मार्क्सवादी धारणा के साथ प्रारंभिक संपर्क के बाद वेबर' ...... इससे पीछे हट गया और उसने महान ऐतिहासिक प्रक्रियाओं में विचारों की महत्वपूर्ण भूमिका की अनिवार्यता को स्वीकार कर लिया।[1] इस प्रकार पार्सन्स ने दिखाया कि मार्क्स और उसके अनुयायी इस बात को नहीं समझ सके कि इतिहास में विचार बहुत महत्वपूर्ण हैं। शीघ्र ही अमरीकी समाजशास्त्रियों में यह धारणा बन गई कि वेबर के लेखन का ध्येय मार्क्सवादी विचारों और प्रणाली विज्ञानिक सिद्धांतों का खंडन करना है।

मार्क्स के प्रति वेबर के दृष्टिकोण के बारे में इस तरह के विचार का हालांकि प्राधान्य है, लेकिन इसे चुनौती भी दी गई है। जर्मन समाजशास्त्र पर 1945 के एक निबंध में अलबर्ट सालोमोन (1945) ने कहा कि वेबर, '...... वेबर की *इकानामी एंड सोसाइटी* मार्क्सवादी अभिधारणा की पुनः परीक्षा था।[2] लगभग इसी समय गर्थ और सी. राइट मिल्स ने लिखा'..... अपने जीवनपर्यत्न मैक्स वेबर ऐतिहासिक भौतिकवाद के साथ उर्वर लड़ाई लड़ता रहा।[3]

वास्तव में मार्क्स के वैज्ञानिक सिद्धांतों के खंडन के रूप में नहीं बल्कि इस विधि के अनुपूरक के रूप में देखा जाना चाहिए।[4] वेबर के संदर्भ में , और समाजशास्त्र और इतिहास के इस विमर्श में यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि इतिहास की अपनी–अपनी अवधारणा में वेबर और मार्क्स अविरुद्ध और अनुपूरक हैं। इन दो विचारकों के बीच स्पष्ट राजनीतिक और विचारधारात्मक अंतरों के बावजूद यह बात सही है।

गुएंथर (1911 : 243) रोथ ने स्पष्ट किया कि अनुपूरकता पर बल देने वाले विचारकों ने जो कहा है 'वेबर और मार्क्स उससे बहुत दूर हैं।' रोथ, जिनके अधीन वेबर ने अपना द्वितीय

शोध निबंध लिखा था ,की प्राथमिक दिलचस्पी इस बात में है कि क्या वास्तव में वेबर के कार्य पर मार्क्स का प्रभाव है। इनका तर्क है कि सामाजिक वर्गों स्तरों और हितों के लिए वेबर का सरोकार आगस्ट मीटजेन से आया है। मीटजेन की भी सपत्ति और श्रम के बीच ऐतिहासिक विरोध में दिलचस्पी थी और उन्हीं के निर्देशन में वेबर ने अपनी *रोमन एग्रेरियन हिस्टरी* लिखी। एक सीमा तक रोथ इस बात से सहमत है कि इस कार्य में' अर्ध मार्क्सवादी दृष्टिकोण' देखा जा सकता है, साथ ही इस बात पर भी बल देता है कि 'इसे मीटजेन से लिया गया है, मार्क्स से नहीं।[5] लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि वेबर को मार्क्स के लेखन की बहुत अच्छी जानकारी थी और इसे उसने दृष्टिगत रखा था।

रोथ (1971: 241–43) ने वेबर द्वारा अपने समय के मार्क्सवाद की कुछ आलोचनाओं का उल्लेख किया है। 1910 में जर्मन सोशलोजिकल एसोसिएशन की पहली बैठक में वेबर ने कहाः

मैं एक वक्ता के इस कथन का विरोध करता हूं कि कोई एक तत्व, भले ही वह प्रौद्योगिकी या अर्थव्यवस्था हो, किसी दूसरे तत्व का 'अंतिम या 'वास्तविक' कारण हो सकती है। यदि हम कारण–कार्य श्रृंखला पर नजर डालें तो एक ओर वे प्रौद्योगिकी से आर्थिक और राजनीतिक मामलों में निकलती हैं तो दूसरी ओर राजनीतिक से धार्मिक और आर्थिक मामलों की ओर से, इत्यादि। कोई विश्राम बिंदु नहीं है। मेरे विचार से अक्सर अंगीकार किया जाने वाला यह विचार वैज्ञानिक स्थापना नहीं रह गया है कि ऐतिहासिक भौतिकवाद के अनुसार कारणों की श्रृंखला में आर्थिक बिंदु अंतिम है।

वेबर ने प्रौद्योगिकी और आर्थिक दशाओं को रड्डमगड्ड करने के लिए मार्क्सवाद की आलोचना कीः

मेरी जानकारी में मार्क्स ने प्रौद्योगिकी की व्याख्या नहीं की है। मेरे विचार से मार्क्स में ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो न केवल विरोधी प्रतीत होती हैं बल्कि यदि हम संपूर्ण और विद्वत्तापूर्ण विश्लेषण करें तो वे तथ्य के विपरीत नजर आती हैं। अन्य बातों के अलावा एक पैसेज अकसर उद्धृत किया जाता हैः हैंड–मिल की परिणति सामंतवाद में होती और स्टीम मिल की पूंजीवाद में। यह टेक्नोलाजिकल बात है आर्थिक नहीं और इसे हम स्पष्ट रूप में सिद्ध करते हैं। आधुनिक समय तक आए हैंड–मिल युग में सभी क्षेत्रों में सभी प्रकार की सांस्कृतिक 'अधिरचनाएं' थीं। [6]

मार्क्स में प्रौद्योगिकीय नियतिवाद नहीं है। उसके कुछ अनुयायियों और आलोचकों, दोनों ने, उसमें यह बात देखी। निश्चित रूप में मार्क्स और एगेंल्स के कुछ द्वयर्थक कथन मिलते हैं। उनमें ऐसे कुछ प्रतिपादन हैं जो इस विश्वास को बल देते हैं कि उन्होंने एक तरह का आर्थिक और यहां तक कि *'उत्पादन शक्ति'* नियमितवाद प्रस्तुत किया। लेकिन इस तरह की व्याख्याओं में महत्वपूर्ण साक्ष्य की उपेक्षा कर दी गई है। यहाँ 'इतिहास की तथाकथित अवधारणा' के कठोर, नियतिवादी और अधि–ऐतिहासिक नहीं अपितू इसके एक प्रणाली वैज्ञानिक विधि होने के कारण मार्क्स और वेबर की अविरुद्धता और अनुपूरकता को समझना आवश्यक है। साथ यह वेबर की मौलिकता को बनाए रखते हुए दोनों असाधारण विचारकों में अत्यधिक उपयोगी विश्लेषणात्मक तत्वों को निकालना और ऐतिहासिक समाजशास्त्र की सुदृढ़ आधारशिला, का विमर्श है।

मार्क्सवाद के साथ वेबर का बौद्धिक सरोकार

वेबर के एक प्रमुख कार्य का शीर्षक *इकोनामी एंड सोसाइटी,* प्रोटेस्टेंट आचारशास्त्र और पश्चिम और पूर्व के धर्मों के प्रति उसके सरोकार, मार्क्स द्वारा उठाए गए मुद्दों और सवालों पर उसकी निरंतर दिलचस्पी को प्रमाणित करते हैं। वेबर का जीवनपर्यन्त बौद्धिक सरोकार आधुनिक पूंजीवाद का मूल और प्रकृति तथा यह प्रश्न रहा कि उसका पश्चिम में ही प्रादुर्भाव क्यो हुआ। अंततः इस प्रश्न का उत्तर पश्चिमी सभ्यता की विशिष्ट प्रकृति और पूर्वी सभ्यताओं से उसके बुनियादी अंतरों में दृष्टिगत हुआ। इस जटिल समस्या के अपने अन्वेषणों में वेबर ने ऐतिहासिक–समाजशास्त्रीय विधि का प्रयोग किया जो पूरी तरह से मार्क्स का विधि के अनुरूप थी। मार्क्स का प्रमुख वैज्ञानिक लक्ष्य यह सिद्ध करना नहीं था कि प्रत्येक स्थान अर्थशास्त्र, समाज के सभी पक्षों को सुनिश्चित करता है। बल्कि उसका लक्ष्य अर्थव्यवस्था और अन्य सामाजिक संस्थानों के बीच बहुविध और ऐतिहासिक रूप में परिवर्तनशील संबंधों के अन्वेषण का मार्ग दिखाना था। यही वेबर का भी वैज्ञानिक लक्ष्य था। मार्क्स का खंडन उसका सरोकार नहीं था, अपितु केवल अपने समय में प्रचलित मताग्रहीं, अपरिष्कृत और यांत्रिक किस्म के मार्क्सवाद का विरोध करना चाहता था।

मार्क्स की तरह वेबर के लिए भी 'आर्थिक' का अर्थ है' ... *अस्तित्व के लिए भौतिक संघर्ष।'*[7] अर्थशास्त्र अन्य संस्थाओं को किस तरह से निर्देशित करता है और इसके बदले में ये प्रथाएं आर्थिक प्रक्रियाओं को किसी तरह प्रभावित करती हैं, इस पर वेबर का बौद्धिंक कार्य का जीवन पर्यन्त केन्द्रित रहा। एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय पत्रिका, *आर्किव फर सोजलविजनशफ्ट अंड सोजलपालि टिक* के संपादक के रूप में वेबर ने निर्णय किया कि पत्रिका का केंद्रीय लक्ष्य होगा '... *मानव समुदाय की सामाजिक–आर्थिक संरचना और उसके ऐतिहासिक संगठन रूपों के सामान्य सांस्कृतिक अभिप्राय का अन्वेषण ।*

यदि वेबर के *प्रोटेस्टेंट एथिक एंड दि स्पिरिट आफ कैपिटलिज्म* का गम्भीरता से विश्लेषण की जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि उसने मार्क्स का खंडन करने का कोई प्रयास नहीं किया। इन सारे अध्ययन के बीच वेबर आर्थिक घटनाओं के बुनियादी महत्व को स्वीकार करता है और इस बात पर बल देता है कि' ....*आर्थिक दशाओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए।*[8] लेकिन *प्रोटेस्टेंट एथिक* में उसने अपने लिए एक विशेष कार्य तय किया अर्थात विनिदिष्ट आचारशास्त्र की आर्थिक प्रासंगिकता की जांच करना जिसे उसके विचार से अपेक्षित महत्व नहीं दिया गया है। इसलिए वह जानबूझकर 'कारण–कार्य श्रृंखला के एक पक्ष' की जांच करता है अर्थात् धार्मिक मूल्यों का आर्थिक आचरण पर प्रभाव। ध्यातव्य है कि वेबर बार–बार को अपने सीमित उद्देश्य का स्मरण कराता है:

वेबर आधुनिक आर्थिक व्यवस्था के निर्माण में प्रोटेस्टेंट आचारशास्त्र के योगदान का पता लगाना और उस प्रक्रिया पर प्रकाश डालना चाहता था जिसके द्वारा विचार इतिहास' में प्रभावी शक्ति बन जाती हैं।इस प्रकार धर्म की भूमि का व्यवस्थित रूप में अन्वेषण करके वेबर मार्क्स को विधि को 'राउंड आउट' करने का प्रस्ताव करता है। वह आर्थिक प्रक्रियाओं के महत्व से इनकार करना या उसे कम नहीं करना चाहता है और न, ही वह यह तर्क देना चाहता है कि पूंजीवाद प्रोटेस्टेंटवाद से आया।

वेबर ने पूंजीवाद को आधुनिक तत्व के रूप में देखाः संस्थाओं की एक बहुत जटिल व्यवस्था जिसमें उच्च मात्रा का तात्विक या तकनीकी बुद्धिवाद रहता है। आधुनिक पूंजीवाद को विभिन्न प्रकार की पूंजीवादी गतिविधि (उदाहरण के लिए सट्टेबाजी, वाणिज्यिक, दुस्साहसी, राजनीतिक) के साथ रड्डमगड्ड न किया जाए जिसके प्रमाण पश्चिम–पूर्व दोनों के ही इतिहास में समान रूप में मिलते हैं। सर्वोच्च स्थान पाने के लिए नई आर्थिक व्यवस्था को विरोधी परंपरागत शक्तियों पर नियंत्रण प्राप्त करना पड़ा। इन शक्तियों पर उसकी विजय को *'ऐतिहासिक आवश्यकता'* या *'ऐतिहासिक अपरिहार्यता'* के रूप में नहीं देखा जा सकता था। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था जब पहली बार सोलहवीं और सत्रहवीं सदी के यूरोप में प्रकट हुई तो इसके साथ अतीत से तेजी से नाता टूटा। इसके आर्थिक आचरण की नई संहिता बनी और नए सामाजिक संबंध सृजित हुए जिनकी चर्चा और शासन की स्वीकृत प्रथाओं के साथ तालमेल नहीं हो पाता था। पूंजीवादी व्यवस्था के अगुआ पुरानी व्यवस्था के विरोध पर किस तरह से नियंत्रण पाकर सफलता तक पहुंचे? यह विचारणीय प्रश्न है। जिसका उत्तर मार्क्सवादियों द्वारा दिया गया कि : नई व्यवस्था का सफल प्रादुर्भाव आर्थिक जगत में परिवर्तनों से संभव हुआ। अमेरिका से मूल्यवान धातु का प्रवाह, वाणिज्य में पूंजी संचय, विस्तृत हो रहे बाजार, जनसंख्या वृद्धि, प्राकृतिक विज्ञान की प्रगति से उत्पन्न नई प्रौद्योगिकी, ये सब बड़े तत्त्व थे।

वेबर ने इन दशाओं के महत्त्व से इनकार नहीं किया है। लेकिन उसका मानना था कि मार्क्सवादी उत्तर अपूर्ण है, क्यों ऐसे बहुत से राष्ट थे जिनमें ये सभी दशाएं मौजूद थीं। लेकिन उन्होंने पूंजीवादी उद्योग को जन्म नहीं दिया। उदाहरण के लिए, लुइस चौदहवें के शासनकाल में उस समय के हिसाब से जबरदस्त संसाधन थे। लेकिन उन्हें ऐशोआराम और युद्धों में उड़ा दिया गया। इसलिए आर्थिक व्याख्या अपर्याप्त है। अनुपूरक तत्व को देखने के लिए अर्थशास्त्र के बाहर देखना होगा। पहले उद्यमियों के अपने आर्थिक ध्येयों में विशेष उत्साह और समर्पण के साथ लगने के कारण प्रोटेस्टेंट आचारशास्त्र–सोलहवीं सदी के धार्मिक परिवर्तनों, रिफार्मेशन के साथ आए नए नैतिक मूल्यों में खोजे जाने चाहिए (जैटलिन 1968: 245–250)।

अपनी शिक्षा में प्रोटेस्टेंटों की तकनीकी विषयों के प्रति अधिक अभिरुचि थी। वे औद्योगिक उद्यमों के मालिकों के रूप में अधिक प्रख्यात थे। दूसरी ओर कैथोलिकों के परंपरागत मानविकी अध्ययनों और शिल्प जैसे गैर औद्योगिक व्यवसायों के प्रति अधिक झुकाव था। दो धार्मिक समूहों की सामाजिक वर्ग पृष्ठभूमि को ध्यान में रखने पर भी ये अंतर साफ दृष्टिगत निम्न और उच्च सभी वर्गों के प्रोटेस्टेंटों ने आर्थिक विवेकवाद' की विकसित करने के प्रति विशेष रुचि दिखाई है जो कैथोलिकों में उतनी नजर नहीं आती..... वेबर, (1958 : 40 – 41)। प्रोटेस्टेंटों में अधिक मुखरित आर्थिक विवेकवाद का क्या स्त्रोत है? प्रथम दृष्टि में ऐसा लग सकता है कि वे कैथोलिक के मुकाबले अधिक सांसारिक और सुखवादी हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। वेबर लिखता है, 'अंग्रेज, डच और अमरीकी प्रोटेस्टेंटों आनंदपूर्ण जीवन के विरोधी थे....' वेबर, (1958 : 41)। वास्तव में वे *तापसिक* थे। उनके तापसिक प्रोटेस्टेंट चरित्र ने उन्हें पूंजीवाद की विवेकपूर्ण भावना का ग्राही बनाया।

इस अभिधारणा को प्रमाणित करने के लिए वेबर बेंजामिन फ्रैंकलिन का सहारा लेता है। *नेसेसरी हिंट्स टु दोज दैट वुड थी रिच और एडवाइज टु ए यंग ट्रेड्समैन* से वेबर कुछ उक्तियों को चुनता है जो उद्यम, किफायत, कठिन परिश्रम और समय की पाबंदी के प्रति

फ्रैंकलिन की निष्ठा को प्रकट करती हैं। फ्रैंकलिन का विचार था कि *'समय ही धन है'* लेकिन वह वेबर के लिए इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि धन के प्रति उसका दृष्टिकोष पहले से युगों के अमीरों से भिन्न था। वेबर का तर्क है कि पैसा कमाने की फ्रैंकलिन की अभिप्रेरणा में सुखवाद नहीं था। इसकी जड़ें उसके बड़े काल्विनवादी पालन–पोषण में हैं। मनुष्य पैसा क्यों कमाए और 'मनुष्यों में से पैसा क्यों बनाया जाए?' वह इसका उत्तर बाइबल में खोजता है। 'क्या आप अपने कारोबार के प्रति सावधान हैं? ऐसा व्यक्ति राजाओं का भी मुकाबला कर सकता है।' इस प्रकार फ्रैंकलिन के कारोबार हित धार्मिक रूप से प्रेरित और उचित थे। वेबर ने अनुसार फ्रैंकलिन प्रारंभिक उद्यमियों जैसा था जिन्हें अपने कारोबारी लेन–देन की स्पष्ट स्वीकृति प्रोटेस्टेंट शिक्षा में साफ नजर आती थी। लेकिन सभी प्रोटेस्टेंट तापसिक जीवन शैली और इससे उत्पन्न पूंजीवादी भावना और उद्यम के पक्षधर नहीं थे। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि तापसिकता का मूल लूथर में नहीं बल्कि काल्विन में मिलता है।

वेबर का मत है कि लूथर के साथ एक नई अवधारणा का आविर्भाव हुआ जो अब तक ईसाई धर्मशास्त्र में नहीं थी। यह अवधारणा जर्मन शब्द *बेरुफ* और इससे भी अधिक स्पष्ट रूप में अंग्रेजी शब्द *कालिंग* में अभिव्यक्त हुई है जिसका अर्थ है कि ईश्वर द्वारा सौंपे गए काम को नैतिकता और कर्तव्यपरायणता के साथ पूर्ण करना। इस अर्थ के साथ यह अवधारणा पहली बार बाइबल के प्रोटेस्टेंट अनुवादों में प्रकट हुई और वह प्रोटेस्टेंटों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गई। मनुष्यों की दैनिक सांसारिक गतिविधियों को पश्चिम में पहली बार धार्मिक महत्व मिला। हालांकि लूथर ने 'कालिंग' का विचार दिया, लेकिन उसका परंपरागत अर्थ ही प्रभावी रहा और उसने पूंजीवादी गतिविधि के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान नहीं किया। इसलिए पूंजीवादी भावना को पोषित करने वाले तत्वों को लूथर की शिक्षाओं में नहीं बल्कि काल्विनवाद में खोजा जाना चाहिए।

अतः स्पष्ट है कि काल्विन का पूर्व नियति का सिद्धांत व्यापार जैसी सांसारिक गतिविधि का मार्ग वेबर ने स्पष्ट किया है कि वास्तव में यह काल्विन नहीं बल्कि उसके अनुयायियों की शिक्षा का परिणाम था। इस प्रकार शुभ कार्य मोक्ष की प्राप्ति की दृष्टि से व्यर्थ हैं लेकिन वे चुनाव का संभव संकेत बन गए। वे नर्क प्राप्ति के भय को दूर करते हैं। सांसारिक कालिंग के नैतिक रूप से कर्तव्यपरायण अनुसरण में कठोर परिश्रम और तापसिक जीवन से दूर ले जाने वाली किसी भी चीज से पूरी तरह से दूरी – यही प्रोटेस्टेंट आचारशास्त्र है। यह अलग–अलग मात्रा में प्यूरिटनवाद, पाइटवाद, मैथडवाद और एनाबापटिस्ट पंथों में मौजूद था और उसका'.... पूंजीवादी भावना के विकास की दृष्टि से सबसे अधिक महत्व था (वही पृष्ठ 151)।

इसी क्रम में वेबर की विधि–आदर्श प्रारूप का विश्लेषण करना चाहूँगा। जिस प्रकार पूर्व में वेबर ने बैंजामिन फ्रैंकलिन का सहारा लेकर नई पूंजीवादी भावना की विशेषताओं पर बल दिया था, उसी प्रकार अब उसने तापसिक प्रोटेस्टेंटवाद की एक बड़ी विशेषता को अपनी चर्चा के केंद्र में रखकर उसे एकीकृत संपूर्णता माना। वेबर की दृष्टि से अंग्रेज प्यूरिटन मंत्री और लेखक रिचर्ड जो 'प्यूरिटन आचारशास्त्र पर लेखकों में अपने प्रमुख रूप से व्यावहारिक और यथार्थपरक दृष्टिकोण, अपने काम के लिए मिली सार्वभौमिक मान्यता के कारण सबसे ऊपर हैं...' (बही, पृ. 155–56)। यदि फ्रैंकलिन नए पूंजीवादी ईथास और नैतिक कर्तव्यपरायण तरीके से कालिंग के अनुकरण की प्रोटेस्टेंट अवधारणा के प्रतीक हैं तो बैक्सटर अपने धार्मिक लेखन के

जरिए 'एक व्यावहारिक और यथार्थपरक दृष्टिकोण' की अभिव्यक्ति के। वेबर का तर्क है कि बैक्सटर ने 'समय धन है' नहीं कहा, लेकिन उसने इसके आध्यात्मिक समकक्ष की बात अवश्य कही है। समय को व्यर्थ नष्ट करना 'सिद्धांत रूप में अपराध है।' वेबर का मत है कि बैक्सटर के विचारों में कुछ धर्मनिरपेक्ष और उपयोगितावादी तत्व हैं जैसे कि श्रम विभाजन पर उसके विचार। बैक्सटर का सिद्धांत *जागीरदारों* द्वारा अत्यधिक भोग और नव *धनाढ्यों* द्वारा प्रदर्शन दोनों से ही घृणा करता है।' लेकिन उसमें 'नभ्र मध्य वर्ग, स्वनिर्मित पुरुष की उच्च नैतिक प्रशंसा की गई है' (वही पृ. 163)। वेबर लिखता है कि प्यूरिटनवाद' पूंजी और श्रम के विवेकपूर्ण संगठन के इथास' को अपने साथ लेकर चलता है और 'अपनी पूरी शक्ति एक चीज के विरूद्ध लगा देता है वह है : जीवन और उसकी सभी चीजों का स्वतःस्फूर्त भोग' (वही पृ. 166)। तापसिकताः

... धन को अपने आप में लक्ष्य मानकर उसके पीछे दौड़ने को अत्यधिक निंदनीय मानती है। लेकिन कालिंग में इसे श्रम द्वारा प्राप्त किया जाना ईश्वर के आशीर्वाद का सूचक था। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है : सांसारिक कालिंग में अथक, निरंतर, व्यवस्थित काम के धार्मिक मूल्यांकन ने जीवन के प्रति उस दृष्टिकोण के विस्तार में अत्यधिक शक्तिशाली लीवर के रूप में काम किया होगा जिसे हम पूंजीवादी चेतना कहते हैं। (वही पृ. 172)

यह बात बैक्सटर ही नहीं बल्कि मैथडवाद के संस्थापक जान वैजले के कार्य से भी स्पष्ट है।

... उन महान धार्मिक आंदोलनों, आर्थिक विकास में जिनका सर्वाधिक महत्व उनके तापसिक शिक्षाप्रद प्रभाव में निहित है, का पूरा आर्थिक प्रभाव विशुद्ध धार्मिक उत्साह के शीर्ष पर पहुंचने के उपरांत उसके गिरने के बाद आया। तब ईश्वर के साम्राज्य की खोज की तीव्रता धीरे–धीरे आगे बढ़कर संयमी आर्थिक गुण में समाहित हो गई। (वही पृ. 176)

इस प्रकार प्रोटेस्टेंट तापसिकता ने श्रम करने के इच्छुक श्रमिक से काम लिए जाने को सकारात्मक धार्मिक मंजूरी प्रदान की। इसने नियोक्ता की चेतना पर भार कम किया और इसके साथ ही श्रमिक को अपने–अपने श्रम को कालिंग मानने के लिए धार्मिक अभिप्रेरणाएं दीं। अतः वेबर का निष्कर्ष है कि : आधुनिक पूंजीवादी चेतना ही नहीं बल्कि पूरी आधुनिक संस्कृति की चेतना का एक बुनियादी तत्व हैः कालिंग के विचार के आधार पर विवेकपूर्ण आचरण और हमने यह स्पष्ट करने की कोशिश की है कि यह तत्व ईसाई तापसिकता की चेतना से उत्पन्न हुआ (वही पृ. 180)।

मार्क्स से अनुपूरकता और अविरोध का यथार्थ

वेबर की अपनी अवधारणा में बहुत सी कमियां हैं जैसे कि यह एक दिशा में कारण–कार्य प्रभाव को खोज रहा है, कि वह आर्थिक दशाओं के बुनियादी महत्व को स्वीकार करता है और यह कि वाद के लेखन में उसे विपरीत दिशा में प्रभाव खोजने की सम्भावना तलाशी। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए यही निष्कर्ष निकलता है कि वह अधूरे अनुसंधान के आधार पर प्रोटेस्टेंट आचारशास्त्र और पूंजीवादी ईथास के बीच परस्पर कन्वर्जेंस पर बल दे रहा है और इस विषय में वह यह जांच कर रहा है कि पूंजीवादी ईथास किस मात्रा में प्रोटेस्टेंट आचारशास्त्र से आया। पूंजीवादी व्यवस्था के स्थापित हो जाने के बाद प्रोटेस्टेंट आचारशास्त्र इसे बनाए रखने हेतु आवश्यक नहीं रह गया। इसके अलावा आचारशास्त्र अपने आप में

पूंजीवादी व्यवस्था के आविर्भाव के लिए पूर्व शर्त नहीं था बल्कि व्यवस्था के विकास के प्रारंभिक चरणों के दौरान उसके अत्यधिक ओजस्वी स्वरूप का कारक था।

तापसिक प्रोटेस्टेंटवाद के आचारशास्त्रीय आदेशों के लिए वेबर इसके संस्थापक काल्विनवाद को नही अपितू रिचर्ड बैक्सटर (1615–1691), जान वैजले (1703–1791), बेंजामिन फ्रैंकलिन (1706–1790) और अन्यों का प्रयोग किया जो काल्विन के सौ साल बाद आए। यह विचारणीय तथ्य है कि अपने विकास क्रम में काल्विनवाद अलग–थलग रहकर नहीं बल्कि आर्थिक और अन्य घटनाओं के प्रभाव से क्या बन गया। यही कारण है कि वेबर ने जिन चिंतकों का उल्लेख किया है उनमें प्रोटेस्टेंट तापसिकता और पूंजीवादी चेतना दोनों का समावेश है। अतः सैद्धांतिक स्तर पर वेबर की यह व्यंजना है कि दो परस्पर स्वायत्त घटनाओं ने एक ऐतिहासिक बिंदु पर एक दूसरे को काटा और आधुनिक विवेकपूर्ण मिजाज के निर्माण में योगदान किया। नए धार्मिक आंदोलन के मानदंडों और नई आर्थिक व्यवस्था के ईथास में बहुत चयनात्मक गठजोड़ था।

जो भाष्यकार और आलोचक *प्रोटेस्टेंट एथिक* को मार्क्सवाद का खंडन बताते हैं। उनका दावा भी सत्य प्रतीत नहीं होता है कि वेबर ने आर्थिक दशाओं को छोड़कर धार्मिक और अन्य आध्यात्मिक 'तत्त्वों' पर बल दिया। आर्थिक इतिहासकार मैक्स वेबर को अर्थशास्त्र के महत्व के बारे में किसी को बताने की आवश्यकता नहीं थी। वास्तविकता यह है कि पूंजीवाद और पूंजीवाद पूर्व दोनों के ही उसके विश्लेषण में आर्थिक दशाओं का केन्द्रीय महत्त्व है। यह बात विभिन्न युगों जिन्हे मार्क्स ने 'उत्पादन विधियां' कहा है, के संदर्भ में वेबर की राय की समीक्षा से सिद्ध हो जाती है।

सामाजिक विज्ञान और मूल्य

मैक्स वेबर ने अपने तुलनात्मक अध्ययन के विमर्श में स्पष्ट किया कि विश्व मोहभंग पूर्व के तुलना में पश्चिम में अधिक हुआ। पश्चिमी संस्कृति और सामाजिक संगठन के लगभग सभी क्षेत्र तार्किकीकरण की प्रक्रिया से गुजरे। जिसका परिणाम यह हुआ कि रहस्यात्मक, ज्ञानातीत, अबोधगम्य शक्तियां औपचारिक तकनीकी विवेकीकरण द्वारा प्रतिस्थापित हुई। अपने आदर्श रूप में विवेदीकरण की आधारभूत मान्यता थी कि वस्तुंए और मनुष्य ज्ञान रूप में व्यवहार करतें है और इस ज्ञान को निश्चित उद्देश्य हेतु प्रयुक्त किया जा सकता है।

वेबर विज्ञान और इसकी महत्ता को लेकर स्पष्ट थे। उनके विचार में विज्ञान हमें साधन दे सकता है, साध्य नही तथा यह सच्चे मूल्य का मार्ग भी प्रशस्त नही कर सकता। पूरे विश्व हेतु एक मापदण्ड के आधार पर विज्ञान या अन्य किसी माध्यम द्वारा मूल्यों की व्यवस्था नही की जा सकती। अगर विज्ञान हमें कुछ दे सकता है तो *हमारे आचरण, अभिप्रेरणाओं, लक्षणों, साधनों और परिणामों को लेकर स्पष्टता* । अब इसी आलोक में समाज विज्ञान की बात करें तो यह हमें मानव कृत्यों की मूल्य–उन्मुख प्रकृति के बारे में अंतर्दृष्टि दे सकता है। ध्यातव्य है कि यदि स्पष्टता मानदंड है तो फिर वेबर के योगदान का असाधारण मूल्य है क्योंकि धर्म और सामाजिक संरचना के उसके तुलनात्मक विश्लेषणों ने, मानव सभ्यताओं को समझने के लिए गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान की है।

निष्कर्ष–

जहाँ तक समाजशास्त्रीय अनुसंधान का संबंध है, मार्क्स और वेबर से वास्तव में यह महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त होता है कि समाज को समझने के लिए इतिहास का बहुत महत्व है। वे निश्चित रूप से सामान्य और सार्वभौमिक को पकड़ना चाहते थे, लेकिन उन्होंने निर्दिष्ट अवधियों की ठोस परिस्थितियों और विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की समानताओं और विषमताओं को लिया। उन्होंने इस बात को स्पष्ट रूप में पहचाना कि सामाजिक तथ्यों की पर्याप्त व्याख्या के लिए यह देखना जरूरी है कि ऐतिहासिक रूप से ये तथ्य अस्तित्व में कैसे आए। उन्होंने यह भी पहचाना कि स्थिरता और परिवर्तन के अध्ययन के लिए तुलनात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण अपरिहार्य है। एक शब्द में ये दो असाधारण विचारक अनुकरणीय ऐतिहासिक समाजशास्त्र के निर्माता हैं क्योंकि ये दोनों ही मुक्त, ऐतिहासिक रूप से स्थापित सिद्धांत और विधि के समर्थक थे।

भारतीय समाज विज्ञानों के लिए वेबर की सार्थकता उनके दार्शनिक सिद्धान्तों व पद्धतिकीय तंत्र में है। वेबर ने सांस्कृतिक पक्ष पर अत्यधिक ध्यान दिया और समाज के संरचनात्मक आधारों की व्याख्या भी वे प्रतीकात्मक स्वरूपों, मान्यताओं व प्रतीकात्मक रूपान्तर तथा तार्किकीकरण से ही करते रहे। यहाँ वेबर अनायास ही पूंजीवाद, अफसरी तंत्र व अन्य आधुनिक समाजिक संगठनों के उदय में *वैचारिकी* के योग को भी ले आए। इस भांति तर्क, विधि और तार्किकता जो धर्माचरण में आने वाले प्रत्यार्पण से ही निकली, आधुनिक समाज के फलस्वरूप आने वाले मोह भंग का प्रेरक बनी। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की समझ में वेबर की यह अंतदृष्टि समाज विज्ञानों के लिए सार्वभौमिक महत्व की है। इससे आधुनिक राष्ट्र व समाज के उदय में होने वाले सामाजिक प्रत्यावर्तनों में लिप्त उथल–पुथल की समझ पैनी होती है। पद्धति के अतिरिक्त वेबर के समाज विज्ञान का यह तत्व भारतीय सामाजिक यथार्थ के अध्ययन के प्रति योगदान को नई सार्थकता प्रदान करता है।

संदर्भ और टिप्पणियाँ

1. टालकोट पार्सन्स, 1929, 'कैपिटलिज्म इन रिसेंट जर्मन लिटरेचर', *जर्नल आफ पालिटिकल इकानामी, 37,* पृ. 40.
2. ए.एम. हैडरसन और टालकाट पार्सन्स, 1947 कि *थ्योरी आफ सोशल एंड इकानामिक आर्गनाइजेशन* .ग्लेनको, III : दि फ्री प्रेस, पृ. 6. (अंग्रेजी अनुवाद)
3. जोनाथन एच टर्नर और लियोनार्ड बीघली, 1981, *दि इमर्जेस आफ सोशलॉजिकल थ्योरी* .होमवुड, III: दि डोरसे प्रेस, उद्धत पैसेज क्रमशः 257, 245 और 243 पृष्ठ पर हैं.
4. देखें अल्बर्ट सालोमोन का लेख, जार्जिज गरविच और विलबर्ट ई. मूर, *ट्वेंटिएथ सेंचुरी सोशलोजी* .न्यूयार्क : दि फिलोसोफिकल लाइब्रेरी, 1945 पृ. 596.
5. एच.एच. गर्थ और सी. राइट मिक्स, 1946 (संपादक) *फ्राम मैक्स वेबर : एसेज इन सोशलोजी* .न्यूयार्क : आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस पृ. 63.
6. जार्ज लिचहीम, 1961, *मार्क्सिज्म:इन हिस्टोरिकल एंड क्रिटिकल स्टडी* ,न्यूयार्क : फ्रेडरिक ए. प्रेजर, पृ. 385.
7. इर्विंग ए. जीटलिन, 1968, *आइडियोलाजी एंड दि डेवेलपमेंट आफ सोशलॉजिकल थ्योरी* .ईगलवुड : क्लिफ्स, एन.जे. : प्रेंटिस–हाल, पृ. 112.
8. रीनाहार्ड बेंडिक्स और गुएनथर रोथ, 1971, *स्कालरशिप एंड पार्टिसनशिप : एसेज ऑन मैक्स वेबर* .वर्कले : दि यूनिवर्सिटल आफ कैलिफोर्निया प्रेस, पृ. 238.

9. डेट, कान्टोवस्की , 1982 मैक्स वेबर आन इडिंया एण्ड इण्डियन इन्टरप्रीटेशन आफ वेबर , इन *कन्टीब्यूशन टू इण्डियन सोशियोलाजी* : Vol.16, No. 2 (1982)
10. सिगंर, मिल्टन 1966 रिलिजन एण्ड सोशल चेन्ज इन इडिया: दी मैक्स वेबर थीसिस, इन इकोनामिक डेवलवमेंट एण्ड कल्चरल चेन्ज, Vol.14, No. 4
11. बोटोमोर, टी0बी0 और मैक्सीमिलियन आर0 (1976), *कार्ल मार्क्स : सेलेक्टेड राइटिंग इन सोशियोलाजी एण्ड सोशल फिलासोफी,* पेनग्विन बुक्स
12. अग्रवाल, अरविन्द 2000, *मैक्स वेबर एण्ड मार्डन सोशियोलॉजिकल थियरीज,* जयपुर : रावत पब्लिकेशनस इर्विंग ए0 जीटलिन 1968, *आइडियोलाजी एंड दि डेवेलपमेंट आफ सोशियोलाजिकल थ्योरी,* ईगलवुडः क्लिफ्स, एन0जे0 :प्रेंटिस–हाल
13. चौहान, बी0आर0 1994, *समाज विज्ञान के प्रेरक स्रोत,* उदयपुर :ए0सी0 ब्रदर्स वेबर, मैक्स 1930 / 2001, *दी प्रोटेस्टेन्ट एथिक एण्ड दी स्पिरिट आफ कैपिटलिज्म* (अनु.: टालकाट पारसन्स, 1930), न्यूयार्कः स्टलेज
14. ए0 एम0 हेन्डरसन और टालकाट पारसन्स (अनुवाद) 1947, *दी थियरी आफ सोशल एण्ड इकोनामिक आरगेनाइजेशन,* न्यूयार्कः आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
15. ई0ए0 शिल्स और एच0ए0 फिन्च (अनुवाद) 1949, *मैक्स वेबर आन दी मेथोडोलजी आफ दी सोशल साइंसेज,* ग्लेनको इलीनॉस : दी फ्री प्रेस
16. जी0 न्यूवर्थ और डॉन मांटिन्डेल (अनुवाद) 1958, *दी सिटी,* ग्लेनको इलीनॉस : दी फ्री प्रेस एच–गर्थ और सी0 राइट मिल्स 1947, *फ्राम मैक्स वेबर : ऐसेज इन सोसियोलाजी,* न्यूयार्क : आक्सफोर्ड यूर्निवसिटी प्रेस
17. बेन्डिक्स, आर. 1974, *नेशन बिल्डिंग एंड सिटीजनशिप,* न्यू दिल्ली : विले
18. चौहान, बी0आर0, 1990, *रूरल अरवन आर्टिकुलेशंस,* उदयंपुर : ए0सी0 ब्रदर्स
19. दुबे, एस0सी0 1965, दी स्टडी आफ काम्लेक्स कल्चर, टी0के0एन0 ऊनीनाथन द्वारा संपादित, *टूवर्डस सोशियोलाजी आफ कल्चर इन इंडिया,* में, न्यू दिल्ली, पृष्ठ 421–423.
20. सिंह, योगेन्द्र 1994, *टेलीवेन्स आफ मैक्स वेबर फार अण्डर स्टैण्डिंग सोशल रीयलटी इन पर्रापेक्टिव आन कैपिटलिज्म* (संपा.) कृष्णा भारद्वाज और सुद्धिपतो कविरा, न्यू दिल्ली : सेज पब्लिकेशन, पृष्ठ 211–230
21. सिंह, योगेन्द्र 1972, *मार्डनाइजेशन आफ इन्डियन ट्रेडिशनस,* (अनुवाद : अरविन्द अग्रवाल 2006), जयपुर : रावत पब्लिकेशनस्

●